शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में "पौधशाला प्रबन्धन "विषय पर दिनांक 22 व 23 नवम्बर, 2016 को वन विभाग के अग्र पंक्ति के कार्मिकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में दिनांक 22 व 23 नवम्बर, 2016 को "पौधशाला प्रबन्धन" विषय पर वन विभाग के अग्र पंक्ति के कार्मिकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें वनमंडल बीकानेर, इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना स्टेज ।।, छतरगढ़, हनुमानगढ, गंगानगर एवं चूरू वन मण्डल के वनपाल, सहायक वन पाल, वन रक्षक एवं कार्य प्रभारित कार्मिक सहित कुल 29 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. टी.एस.राठौड़ ने कहा कि वैज्ञानिक शोध कार्य आप तक पहुंचे यही प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य है । डॉ. राठौड़ ने पौधशाला प्रबन्धन से संबंधित विषय जैसे बीज स्त्रोत, थैलियों में मिश्रण भरना, कंपोस्ट खाद, जैव उर्वरक, पौधों की ग्रेडिंग इत्यादि का जिक्र करते हुए बताया कि वृक्षारोपण की उद्देश्य प्राप्ति के लिए अच्छे बीजों से प्राप्त पौध सामग्री एवं इस पौध सामग्री की कायिक गुणवत्ता (physical quality) भी महत्वपूर्ण है । इससे पूर्व कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय वस्तु की जानकारी देते हुए दो दिवसीय गतिविधियों की जानकारी दी । उद्घाटन सत्र के कार्यक्रम का संचालन कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक "डी" श्रीमती भावना शर्मा ने किया।

तकनीकी सत्र की शुरूआत डॉ. टी.एस.राठौड के "बीजों के रखरखाव/प्रबन्धन एवं उच्च गुणवत्ता युक्त पौधों का उत्पादन (Seed Handling and production of quality seedlings) विषय पर संभाषण से हुई जिसमें डॉ. राठौड ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वानिकी की मांग और आपूर्ति के मद्देनजर वानिकी उत्पादन में वृद्धि की संभावना एवं आवश्यकता के संदर्भ में उच्च गुणवत्ता युक्त पौधों के उत्पादन का महत्व बताते हुए बीजों के संग्रहण, उपचार, भण्डारण के संबंध में पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी । डॉ. राठौड़ ने "पौधशाला प्रबन्धन" विषय पर अगले संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण में पौधशाला स्थल चयन सहित

पौधशाला प्रबन्धन से संबंधित विभिन्न प्रक्रियाओं की रोचक जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को करायी। इसके बाद वन संरक्षण प्रभाग की वैज्ञानिक डॉ. संगीता सिंह ने "नर्सरी में जैविक खाद का उपयोग (Application of biofertilizer in forest Nursery), कंपोस्ट तैयार करना, खाद बनाना" विषय पर संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण दिया जिसमें जैविक खाद का महत्व एवं उपयोग तथा कंपोस्ट की जानकारी के साथ साथ डॉ. सिंह ने पौधशाला से संबंधित विभिन्न रोगों के बारे में भी जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को कराई । प्रथम दिवस के अन्तिम संभाषण में अकाष्ठ वनोपज प्रभाग की वैज्ञानिक डॉ. रंजना आर्या ने "औषधीय पादप एवं उनका संवर्धन" विषय पर संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण देते हुए औषधीय पौधों के बारे में जानकारी दी । उन्होंने आक एवं गुग्गल प्रजाति पर हुए शोध कार्यो की जानकारी भी दी । डॉ. आर्या ने नमक प्रभावित भूमि के लिए पौधारोपण हेतु किये गये शोध कार्यो की जानकारी भी प्रशिक्षणार्थियों को कराई ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन की शुरूआत पारिस्थितिकी प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. जी.सिंह के "शुष्क क्षेत्रों में वनीकरण एवं पौधारोपण तकनीक" (Afforestation & plantation technology

in dry lands) विषय से हुई जिसमें डॉ. सिंह ने शुष्क क्षेत्रों के लिए वृक्षारोपण के तरीके एवं उपयुक्त प्रजातियों जैसे पहलुओं की वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी । डॉ. सिंह ने अपने संभाषण में टिब्बा स्थिरीकरण, वृक्षारोपण में वृक्ष प्रजातियों के साथ साथ घास एवं झाड़ी वृक्ष प्रजातियों को लगाने की आवश्यकता प्रतिपादित की । तत्पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान की प्रायोगिक एवं उच्च तकनीक पौधशाला का क्षेत्र भ्रमण (field visit) कराया गया जहाँ पर श्री सादुल राम देवड़ा, अनुसंधान सहायक प्रथम ने मदरबेड, थैलियों के आकार (container sizes), जड़ साधक (root trainer), मिश्रण, कंपोस्ट तैयार करना, बीजों का उपयोग, बीज बुवाई, कटिंग इत्यादि विषयों की जानकारी संभाषण एवं प्रदर्शन के माध्यम से उपलब्ध करायी । प्रशिक्षणार्थियों को पौधशाला का भ्रमण करवाकर मदरबेड, बेड, प्रिकिंग, उच्च तकनीक पौधशाला के विभिन्न घटक जैसे एग्रोशेड नेट, फव्वारे, धुंध कक्ष (mist chamber) आदि की व्यावहारिक (practical) जानकारी दी गयी । पौधशाला की प्रक्रियाओं का स्वयं प्रशिक्षणार्थियों ने भी अभ्यास किया । प्रशिक्षणार्थियों ने पौधशाला परिसर में स्थित औषधीय पौधों के जर्म प्लाज्म बैंक का अवलोकन भी किया । श्री उमाराम चौधरी ने भी पौधशाला संबंधी कार्यो और औषधीय पौधों की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को कराई । श्री चौधरी ने पौधशाला परिसर में ही प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए वनों से प्राप्त प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों की जानकारी दी तथा पॉलीथीन के दुष्प्रभाव का भी जिक्र किया ।

तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर वानिकी संवर्धन में नवीन अन्वेषण एवं तकनीक की जानकारी प्राप्त की । प्रयोगशाला भ्रमण के दौरान विभिन्न शोधकर्ताओं ने प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विषयों, जिसमें वन संरक्षण प्रभाग में वृक्षों

में लगने वाले रोग, अकाष्ठ वन उपज प्रभाग में अकाष्ठ वनोपज संबंधी शोध कार्यो, पारिस्थितिकी प्रभाग में पारिस्थितिकी संबंधी जल एवं मिट्टी के घटक/जाँच इत्यादि की प्रक्रिया, वृक्ष प्रजनन एवं आनुवांशिकी प्रभाग में उत्तक संवर्धन (Tissue culture) इत्यादि विषय भी सम्मिलित थे, की जानकारी करायी ।

प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान के निर्वचन एवं विस्तार केन्द्र का भी भ्रमण कर विभिन्न पोस्टर इत्यादि के माध्यम से प्रदर्शित विभिन्न सूचनाओं/सामग्री का अवलोकन किया । यहाँ श्री चौधरी ने अवक्रमित भूमि का पुनर्वासन,टिब्बा स्थिरीकरण,जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन, कृषि वानिकी चारागाह विकास इत्यादि विषयों से संबंधित जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को उपलब्ध करायी ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों से फीड बेक (feed back) प्राप्त किया गया । इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक (शोध) डॉ. टी.एस.राठौड़ ने प्रशिक्षणार्थियों का आह्वान किया कि इस प्रशिक्षण में जो भी आपने सीखा है उसको व्यावहारिक रूप से उपयोग में लावे ताकि प्रशिक्षण का उद्देश्य सफल हो सकें । उन्होंने शोध कार्य को फील्ड से जोड़ने की आवश्यकता भी बतायी । इससे पूर्व कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का ब्यौरा प्रस्तुत किया । इस अवसर पर वृक्ष प्रजनन एवं आनुवांशिकी प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. यू.के.तोमर ने अपने उद्‌बोधन में शोध और वानिकी कार्यो के समन्वयन और जुड़ाव की आवश्यकता

प्रतिपादित की । कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक श्रीमती भावना शर्मा ने समापन सत्र का संचालन करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया । इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एवं समन्वयन कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक श्रीमती भावना शर्मा ने किया तथा इसमें प्रभाग के अनुसंधान सहायक प्रथम श्री रतनाराम लोहरा, तकनीकी सहायक श्रीमती मीता सिंह तोमर, एवं श्री तेजाराम का विशेष सहयोग रहा ।